विधायकों का दृष्टिकोण समाज के सबसे कमजोर वर्गों के विकास की वृहत् संकल्पना से प्रेरित होना चाहिए-लोक सभा अध्यक्ष

हैदराबाद, 19 जुलाई, 2014: हैदराबाद में 19 जुलाई, 2014 को आंध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य भाषण देते हुए लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा कि आज हमारे समाज के सामाजिक-आर्थिक और राजनैतिक परिवेश मे तेजी से आ रहे बदलाव के कारण हमारे तथा सभा के समक्ष अक्सर बहुत सी चुनौतियां आ जाती हैं । प्रातिनिधिक संस्थाओं और उनके सदस्यों से यह आशा की जाती है कि वे इन चुनौतियों की बारीकियों को समझ कर समाज के समक्ष आ रही समस्याओं का उचित समाधान करें । इस संबंध में उन्होंने यह कहा कि विधायकों का दृष्टिकोण समाज के सबसे कमजोर वर्गों के विकास की वृहत् संकल्पना से प्रेरित होना चाहिए क्योंकि उनके विकास से ही समाज का विकास संभव है ।

श्रीमती महाजन ने यह भी कहा कि संसदीय लोकतंत्र की सफलता स्वस्थ और सुव्यवस्थित वाद-विवाद में निहित होती है और इस प्रयोजनार्थ नियमों, परिपाटियों, प्रक्रियात्मक उपायों आदि की एक व्यापक प्रणाली विकसित की गई है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है -मर्यादा बनाये रखना और अध्यक्षपीठ तथा साथी विधायकों का सम्मान करना । सभा के अधिकारों एवं विशेषाधिकारों का संरक्षक होने के नाते अध्यक्षपीठ का निरादर करना संपूर्ण सभा का निरादर करने के समान है । इन सभी कार्यों में सभा के विभिन्न नियमों, परिपाटियों और प्रक्रियाओं, संसदीय परम्पराओं, प्रश्नकाल तथा प्रस्तावों आदि सहित विभिन्न उपायों की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है । यह ज्ञान उनके द्वारा किए गए हस्तक्षेपों, वाद-विवादों में उनकी भागीदारी और विशेष रूप से समिति के कार्यों में उनके योगदानों में अवश्य परिलक्षित होगा।

इस बात पर जोर देते हुए विशेषाधिकार और जनादेश के साथ जिम्मेदारी भी आती है, श्रीमती महाजन ने कहा कि यह जवाबदेही न केवल उन लोगों के प्रति है जिन्होंने अपने प्रतिनिधियों के लिए मतदान किया बल्कि उनके लिए भी है

जिन्होंने उनके पक्ष में मतदान नहीं किया । विधायकों का उद्देश्य अपने निर्वाचन क्षेत्र और अपने राज्य के लोगों का समग्र कल्याण होना चाहिए और इसी तरह वे सम्मान के पात्र बन सकते हैं । उन्होंने विधायकों को नैतिकता, सदाचार और मूल्यों पर अडिग रहने की सलाह दी क्योंकि यही उनके सार्वजनिक जीवन के आधार हैं ।